राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 687

कूबड़ा शैतान

भोकाल

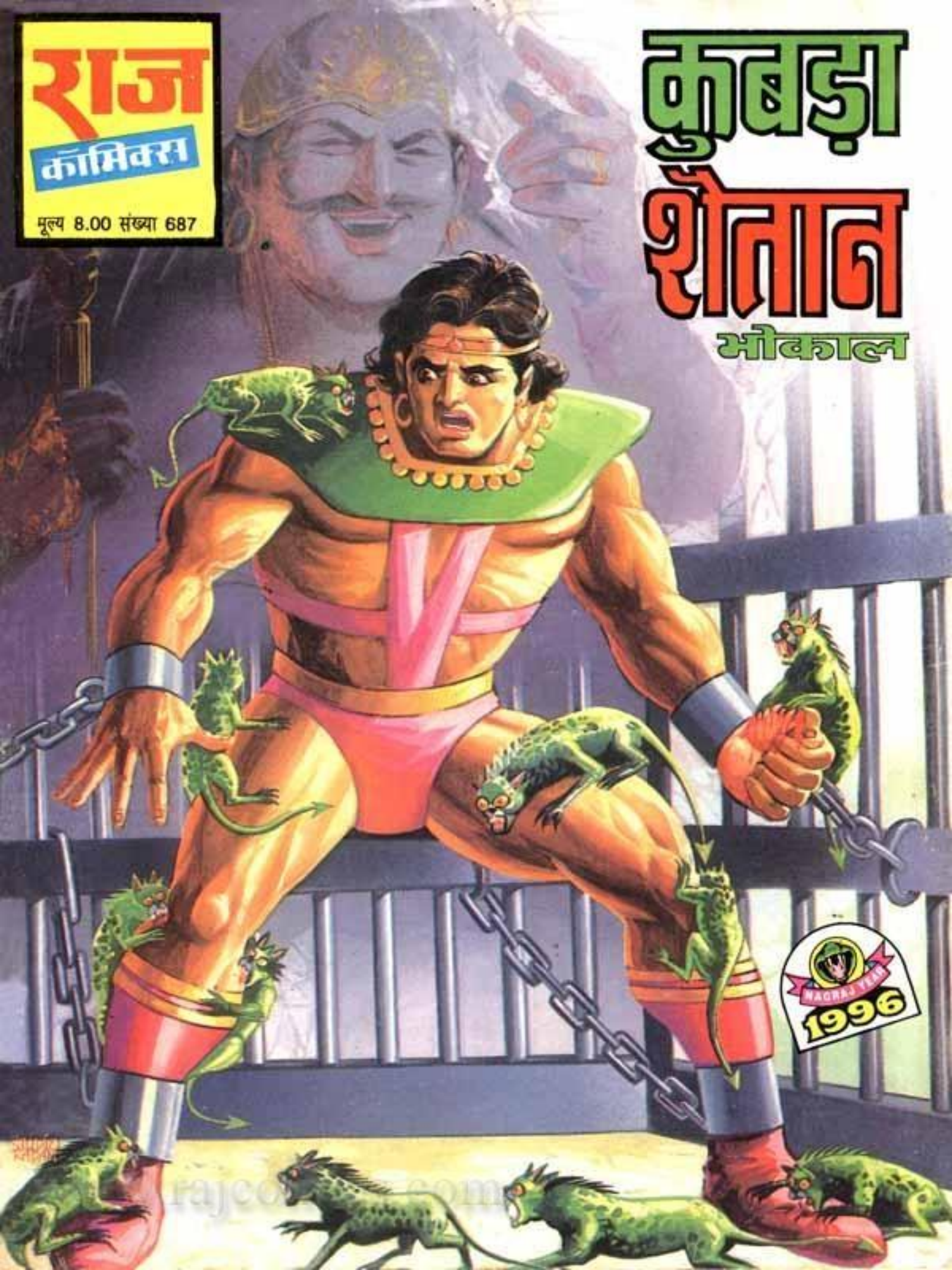

1510

फ़ौलाद शैतान

◇ लेखक :- संजय गुप्ता. ◇ सम्पादक :- मनीष गुप्ता. ◇ चित्रांकन :- कदम स्टुडिओ.

रहस्यमयी शक्तियों से भरा महल तिलिस्मा जिसका स्वामी है महाबली पराक्रमी ओकाल—

विश्व के सबसे सुरक्षित महल तिलिस्मा पर आक्रमण करके उस पर विजय पाना असम्भव है।

महल को चारों तरफ से घेर लो।

फिर आज जो तिलिस्मा के आसपास घट रहा है वह उसकी सुरक्षा के लिए है या उस पर विजय हासिल करने के लिए?

© Raja Pocket Books

तिलिस्मा के अन्दर मौजूद इन पराक्रमियों के मस्तिष्क में हथौड़े की भांति बज रहा था यह सवाल—
ये... ये क्या हो रहा है भोकाल?... राज्य के सैनिक तिलिस्मा को क्यों घेर रहे हैं?
कारण बाहर जाकर ही पता चल सकेगा...
...आओ!
कारण उन महारथियों को भी भौचक्का कर देने वाला था—
क्या?.. त... तुम हमें बंदी बनाने आये हो?
हां, महाबली! राजा का यही आदेश है।
राजा का आदेश?.. ये राजा कहां से आ गया? राज्य पर तो रानी मोहिनी का शासन...
था... रात्रि के चौथे पक्ष तक परन्तु रात्रि के समाप्त होने के साथ ही वह भी समाप्त हो गया।

ये राजा हैं कौन?... और उसने हमें बंदी बनाने का आदेश क्यों दिया?
ये तो आपको राजदरबार में पहुंचकर ही पता चलेगा। सैनिको, ले चलो इन्हें।

अतिक्रूर क्रोधित हो उठा—
ठहरो। जिसने भी हमारी तरफ बढ़ने का प्रयत्न किया मैं उसकी टांगें तोड़ दूंगा।
नहीं मित्र अतीक! इसमें इनका कोई दोष नहीं है। ये तो अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं।
बड़ी मुश्किल से अतिक्रूर को शान्त करके...

...भोकाल सेनापति प्रवीणकुमार की तरफ पलटा—
चलिए सेनापति-जी!

फिर सभी सैनिकों से घिरे राजधानी की तरफ चल दिये—

शीघ्र ही राजदरबार में—
वैसे तो इसकी कोई आवश्यकता नहीं भोकाल, परन्तु फिर भी मैं तुम्हें अपना परिचय दिये देता हूं। मेरा नाम विवेकमोहन है। स्वर्गीय राजा विकासमोहन का बड़ा भाई। विकासनगर का वर्तमान राजा और...
... और उधर बैठी तुम्हारी पत्नी रूपसी का पिता।
ओहह!
मैं विकासनगर का राजा कोई सैनिक विद्रोह करके नहीं, राज्य के सभी दरबारियों और गणमान्य व्यक्तियों की सर्वसम्मति से बना हूं।
मोहिनी ने भी सहर्ष मुझे राजा मान लिया है।
ओह, एक ही रात में प्रजा और रानी मोहिनी ने इसे राजा बना दिया... कैसे हो गया ऐसा?
प्रत्यक्ष तौर पर बोला भोकाल—
हमें बंदी बनाकर यहां बुलवाने का तात्पर्य क्या है?
विकासनगर का राजा बनते ही मैंने पहला प्रण यह किया है कि मैं अपनी पुत्री रूपसी को उसका अधिकार दिलवाऊंगा, इसलिये हमने तुम्हें यहां बुलाया...

... पूरे समाज के सामने तुम्हारा रूपसी के साथ विवाह हुआ है भोकाल ! यह तुम्हारी पत्नी है इसलिए मैं तुम्हें रूपसी को ससम्मान अपनाने और...

...इन सभी विदेशियों को तुरन्त ही राज्य छोड़कर चले जाने का आदेश देता हूं।
!!?!

इसी के साथ भोकाल को विरोध भरा स्वर पूरे राजदरबार में गूंज उठा—
यह झूठ है। रूपसी मेरी पत्नी नहीं। मेरे साथ इसके अधूरे फेरे हुए हैं यह बात भी सारी दुनिया जानती है कि वे फेरे छल और फरेब से लिये गये थे। धोखे से किया गया विवाह कहीं मान्य नहीं होता...

हम सभी बाहर से जरूर आए हैं, लेकिन विकासनगर की भूमि और प्रजा को अपने प्राणों से ज्यादा चाहते हैं। इस राज्य के मान-सम्मान को सैकड़ों बार हमने अपने प्राणों पर खेलकर बचाया है। राजा विकासमोहन ने स्वयं हमें इस राज्य की नागरिकता प्रदान की थी।

... हां, तुम चाहो तो तुरीन को दासी बनाकर रख सकते हो।
मान्यवर!
तुरीन के इस अपमान ने भोकाल को क्रोध से चीखने के लिए मजबूर कर दिया--

लेकिन भोकाल से भी तेजी से चीखा राजा विवेकमोहन--
चीखो मत भोकाल! तुम इस निर्णय को मानने के लिए वचनबद्ध हो।

असहाय ढंग से भोकाल सिर झुकाए बैठी रानी मोहिनी की तरफ पलटा--
भोकाल के साथ अन्याय हो रहा है रानीजी और आप चुप बैठी हैं!.... कुछ बोलिए रानीजी, कुछ बोलिये।
उफ! नहीं।
भोकाल की लड़ाई...

...तुरीन से ना देखी गई। बिफरी शेरनी सी दहाड़ी वह--
मत चिल्लाओ...मत चिल्लाओ भोकाल! यहां तुम्हारी कोई नहीं सुनने वाला। सब मिले हुए हैं। सभी ने मिलकर हमारे विरुद्ध यह षड़यंत्र रचा है।

खामोश! दुष्ट लड़की! तूने यह कहकर सारे दरबार का घोर अपमान किया है। तुझे इसका ऐसा दण्ड मिलेगा कि तेरी आत्मा भी थर्रा उठेगी।
सैनिको! इसकी गर्दन इसके धड़ से अलग कर दो।
राजा का आदेश पाकर...

...जो बहुत से सैनिक तूरिन की तरफ बढ़े तो--
वहीं रुक जाओ अन्यथा भून कर रख दूंगी।
ओह!
???

दूसरी तरफ से तूरीन की तरफ बढ़े सैनिकों को अतिक्रूर का सामना करना पड़ा--
अतिक्रूर के होते तुम क्या मृत्यु भी तूरीन का बाल-बांका नहीं कर सकती।
धड़ाक
धाड़

शूलान, वेणु, लड़ाकी और पीकू भी इस लड़ाई में कूद पड़ते अगर भोकाल ना बीच पड़ता--
रुक जाओ साथियो! ये तुम क्या कर रहे हो? राज सैनिकों पर हाथ उठाना अपराध है।.. रुक जाओ तुम! हम वार्ता से इस समस्या को सुलझा लेंगे।

अब वार्ता से कुछ नहीं होने वाला मित्र भोकाल! वो देखो तूरीन को समाप्त करने के लिए सैनिक पलटन आ रही है।

तुम पीछे हटो। मैं इन्हें रोकता हूं।
मारो इन सबको।

अतिक्रूर ने कांस्य की भारी मूर्ति को उठाकर उस पर सभी तलवारों को रोका--
रुक जाओ!
टनाक
टनाक

पीछे हटो!
समझ में नहीं आ रहा इन सैनिकों को क्या हो गया जो ये मेरी बात सुनकर शान्त होने की जगह उग्र होते जा रहे हैं।
सैनिकों को उग्र होने से वो रोक पाया भोकाल तो...

...उसने अपने साथियों से निवेदन किया--
मैं जानता हूं तुम्हारे आगे ये सैनिक भुनगे से ज्यादा कुछ नहीं हैं। लेकिन ये सभी निर्दोष हैं इसलिए तुम्हें इन पर वार नहीं करना, मात्र अपना बचाव करो... तुम्हें मेरी सौगंध।
ठीक है मित्र भोकाल, जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा।

अब वार करने की जगह सभी अपने बचाव में जुटे हुए थे-

इधर सिंहासन पर बैठा राजा विवेक मोहन क्रोध से सूखे-पत्ते की तरह कांप रहा था—
उसकी आंखों में शैतान सी हिंसकता साफ नजर आ रही थी—
गुर्राहट
मुंह से निकल रही थी किसी दरिन्दे सी गुर्राहट...

...जिसे देखकर पास बैठी रूपसी बुरी तरह हैरान थी-
उफ! ये पिताजी को क्या हो रहा है!... सैनिकों को मारता देख इतने क्रोधित क्यों हो गये हैं... और... और इनके मुख से ये विचित्र सी गुर्राहट क्यों निकल रही है?
गुर्राहट

अचानक रूपसी की निगाहें राजा विवेक मोहन के लबादे से बाहर निकले हाथ पर पड़ी तो वह मानो सांस लेना ही भूल गई-
ओह! नहीं! य... ये पिताजी के हाथ को क्या हुआ?

उफ!
!!
अभी रूपसी हैरान हाथ को ही देख रही थी कि...

...राजा विवेक मोहनी की प्यार भरी आवाज ने उसे चौंकाया-
क्या हुआ रूपसी?
क... क... कुछ नहीं, कुछ भी तो नहीं।
ओह! पिताजी के दोनों हाथ अब सामान्य हैं अभी-अभी मैंने जो देखा वह कहीं स्वप्न तो नहीं था।

इधर भोकाल, अतिक्रूर, दुरीन, शूलान वगैरहा अपना बचाव करते हुए बाहर की तरफ बढ़ रहे थे---

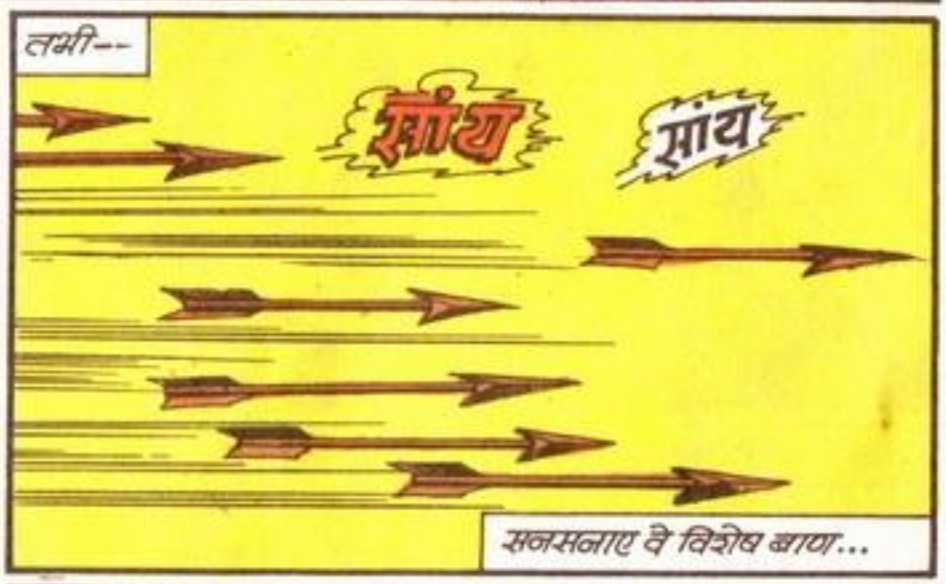
तभी--
सांय
सांय
सनसनाए वे विशेष बाण...

...और-
!!
?!

ये बाण कहां से आये... किसने फेंके ?
मैंने...
... आपकी इस दासी सलोनी ने और ऐसा मैंने इसलिए किया कि मैं आपको पाप से बचाना चाहती हूँ।
कौन सा पाप किया है मैंने ?
भोकाल के इस सवाल पर...

... आंसुओं से लबालब भर गये वे मृग से नयन—
ये आप मुझसे नहीं अपने हृदय से पूछिए स्वामी! पहले तो आपने तूरीन नामक इस 'मोहिनी' के रूप और मोह के जाल में फंसकर मुझे अपनी पत्नी मानने से इंकार कर दिया और अब यही आप राजकुमारी रूपसी के साथ भी करने जा रहे हैं।

मेरे परमेश्वर, आप इस मोहिनी के मोह जाल से निकलकर हमें अपना लीजिए। जल बिन मछली की भांति तड़पता हुआ मत छोड़िये हमें...

...मैं आपके पांव पड़ती हूं स्वामी! ऐसा अनर्थ मत कीजिए।
!!
?!!
!!
सभी दंग अवस्था में खड़े देखते रह गये...

इस स्थिति का लाभ उठाते हुए चतुरा राजा विवेकमोहन—
भोकाल किसे छोड़ेगा किसे अपनाएगा इसका निर्णय बाद में होगा। फिलहाल इन सभी को बंदी बनाकर बंदीगृह में डाल दिया जाये।
नहीं पिताजी! ऐसा मत कीजिए!

यह सब तुम्हारी ही भलाई के लिए किया जा रहा है पुत्री! इसलिए इस कार्य में अड़चन ना बनो।
इधर राजा विवेकमोहन ने बड़े प्यार से रूपसी को समझाया-

यह राज्य की कानून व्यवस्था का प्रश्न है मित्रों! इसलिए इसमें कोई विघ्न मत डालना।
और उधर सभी को बंदी बना लिया गया—
मोटी-मोटी बेड़ियों में जकड़कर—

...सैनिक उन्हें लेकर बंदीगृह की तरफ चल दिये-

इधर वह रूप की देवी रूपसी के पास पहुंची--
बहन! मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगी मेरे साथ-साथ तुम्हें भी तुम्हारा अधिकार मिल जाये। लेकिन इस समय वो बंदी बना लिये गये हैं। उन पर कोई आंच ना आये इस बात का ध्यान रखना।

फिर वहां रुकी नहीं रही सलोनी-
अद्भुत है यह स्त्री, भोकाल को अपना पति भी मानती है और मुझे मेरा अधिकार दिलाने की बात भी कर रही है।...
...लेकिन एक बात उसने बहुत सही कही है। मुझे भोकाल का ध्यान रखना है।

पिताजी इस बात का पूरा ख्याल रखेंगे क्योंकि अपनी प्यारी पुत्री को वह हरदम खुश रखना चाहते हैं और वे जानते हैं कि मेरी खुशी भोकाल के खुश रहने में है।
अपने पिता के प्रति रूपसी का सोचना कितना गलत था-

...दो उसे उसी रात पला चल गया –
उनके बंधनों का तो प्रबंध कर रखा है ना ?
इस विषय में आप बेफिक्र रहिए में जानता हूं छोटे - मोटे बंधन उनके लिए कोई मायने नहीं रखते, इसलिए मैंने उन सभी को मोटी फौलादी जंजीरों से भी बांधा हुआ है...
ये आवाजे तो पिताजी के कक्ष से आ रही हैं इतनी रात गये वे किससे और किसके बारे में बात कर रहे हैं, देखती हूं।

भोकाल को उसके साथियों से अलग बेहद मोटी सलाखों वाले एक विशेष पिंजरे में बंद किया गया है। उसके मुंह में एक गोल वस्तु इस ढंग से ठूंस दी गई है कि वह अपने मुंह से आवाज निकालकर अपने प्रलयंकारी रूप को नहीं प्राप्त कर सकता।

??
बस आपका आदेश मिलते ही उन्हें मृत्यु दे दी जाएगी।
ठीक है, अब से कुछ देर बाद रात्रि का तीसरा पहर आरम्भ होगा। वही समय ठीक रहेगा।

वह सैनिक बाहर निकल गया तो एक वहशी ठहाका लगा उठा राजा –
हा...हा...हा.! कुछ ही देर की बात है मेरे द्वारा कैलाश गये षड्यंत्र में फंस चुके भोकाल और उसके साथी मृत्यु का ग्रास बन जायेंगे, फिर इस राज्य पर बिना किसी अड़चन के राज करेगा...

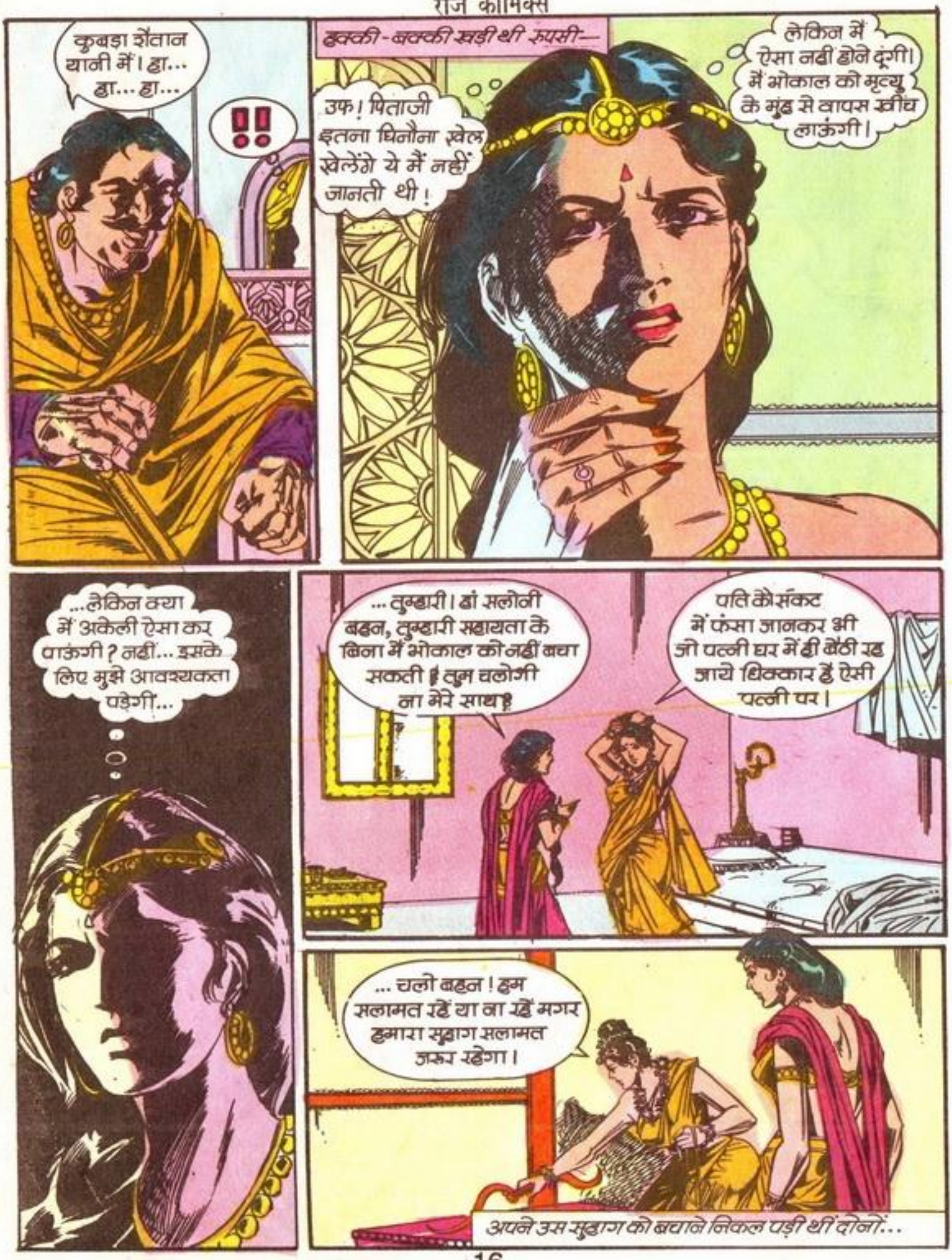
कुबड़ा शैतान यानी मैं। हा... हा... हा...
!!
हक्की-बक्की खड़ी थी रुपसी—
उफ! पिताजी इतना घिनौना खेल खेलेंगे ये मैं नहीं जानती थी!
लेकिन मैं ऐसा नहीं होने दूंगी। मैं भोकाल को मृत्यु के मुंह से वापस खींच लाऊंगी।
...लेकिन क्या मैं अकेली ऐसा कर पाऊंगी? नहीं... इसके लिए मुझे आवश्यकता पड़ेगी...
... तुम्हारी। हां सलोनी बहन, तुम्हारी सहायता के बिना मैं भोकाल को नहीं बचा सकती। तुम चलोगी ना मेरे साथ?
पति को संकट में फंसा जानकर भी जो पत्नी घर में ही बैठी रह जाये धिक्कार है ऐसी पत्नी पर।
... चलो बहन! हम सलामत रहें या ना रहें मगर हमारा सुहाग सलामत जरूर रहेगा।
अपने उस सुहाग को बचाने निकल पड़ी थीं दोनों...

... जो इस समय बंदीगृह के इस विशेष पिंजरे में असहाय था-
मैंने स्वयं व अपने साथियों को बंदी बनवाकर अच्छा नहीं किया। राजा विवेकमोहन के इरादे हमारे प्रति अच्छे नहीं हैं और इसका प्रमाण है मेरी यह दशा।
...शायद दुरीन अतिक्रूर, शूलान वगैरहा के साथ भी उसने ऐसा ही कुछ किया है।...
...अरे!
सोचते-सोचते अचानक चौंका था भोकाल...
...जिसका कारण था एक तरफ से आती वे आवाजें...
चिर्ऽऽ
चिर्ऽऽ
चिर्ऽऽ
...जिनकी तरफ उसने एक झटके से अपना सिर घुमाया...
...और चकित रह गया-
ओह! नहीं, वे छोटे-छोटे शक्ल से भयंकर लगने वाले सैंकड़ों जीव विचित्र ध्वनि करते मेरी ही तरफ बढ़ रहे हैं।... परन्तु क्यों?
चिर्ऽऽ चिर्ऽऽ

दूसरे ही क्षण भोकाल के शरीर में झुरझुरी का तूफान दौड़ गया-
रोयां-रोयां कांप गया उसका -
आश्चर्य से आखें फटती चली गई--
हे महागुरु !... ये... ये सारे जीव तो मांसाहारी हैं और... इन्होंने मेरे शरीर पर चढ़कर मेरा मांस नोचना भी शुरू कर दिया है।
ये मांसाहारी जीव मेरा मांस नोंच रहे हैं और मैं ना केवल बेहद मजबूती से बंधा हूं बल्कि मैं अपने मुंह से आवाज भी नहीं निकाल सकता। मैं पूरी तरह विवश हूं।
मुझे लगता नहीं कि मैं इस स्थिति में कुछ कर पाऊंगा।
इधर मृत्यु भोकाल के शरीर पर...

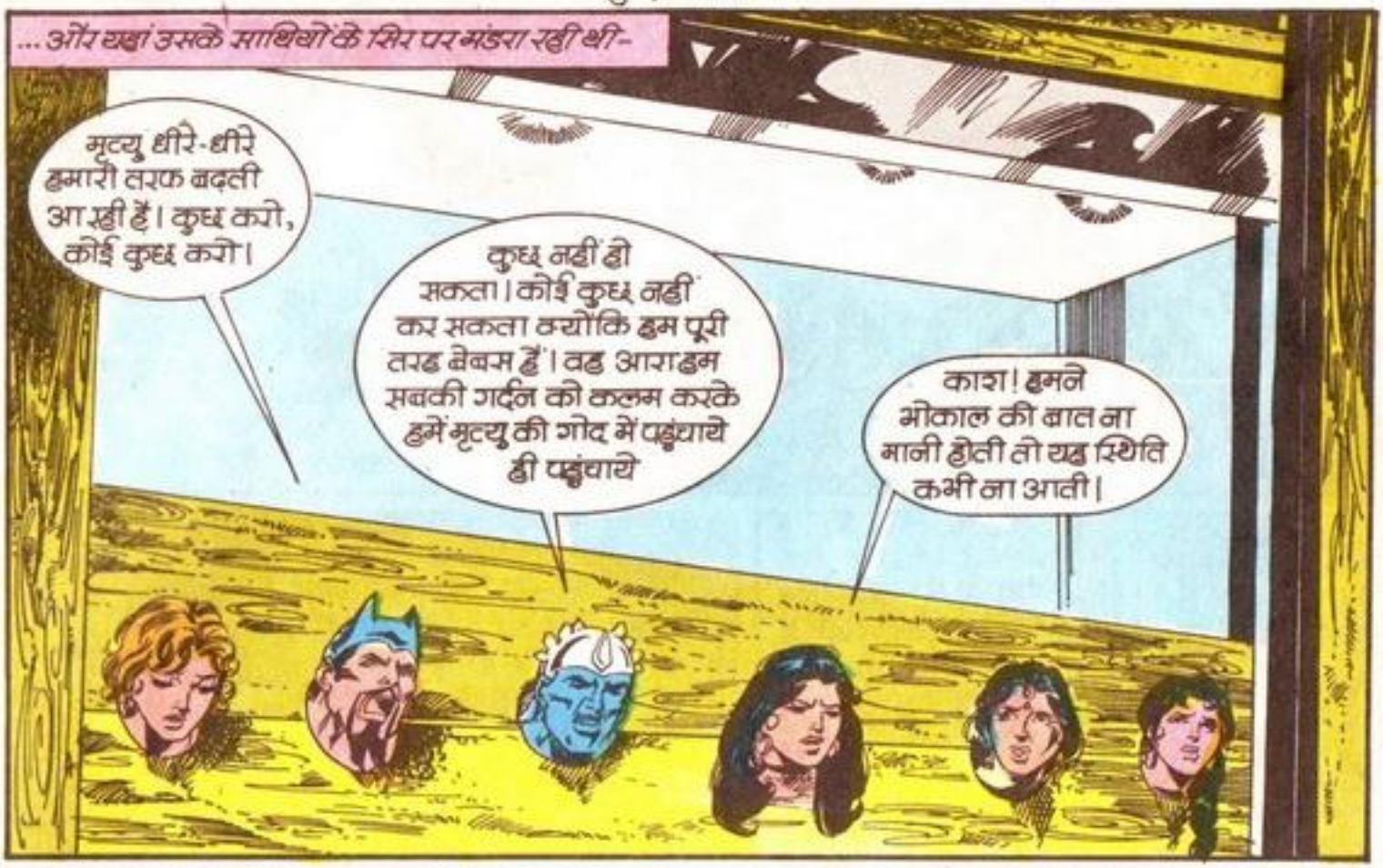
... और यहां उसके साथियों के सिर पर मंडरा रही थी-
मृत्यु धीरे-धीरे हमारी तरफ बढ़ती आ रही है। कुछ करो, कोई कुछ करो।
कुछ नहीं हो सकता। कोई कुछ नहीं कर सकता क्योंकि हम पूरी तरह बेबस हैं। वह आरा हम सबकी गर्दन को कलम करके हमें मृत्यु की गोद में पहुंचाये ही पहुंचाये
काश! हमने भोकाल की बात ना मानी होती तो यह स्थिति कभी ना आती।

ऐसी स्थिति में भी तूरीन को अपने पति भोकाल की चिन्ता थी...

...लेगा!
सांय
खच्च
चिर्रss
चिर्रss
बस स्वामी! आपने जो कष्ट सहना था वह सह लिया। अब आप की दासियां आपको बचाने आ गई हैं।
रूपसी और सलोनी!

रूपसी तो तड़प ही उठी भोकाल की हालत देखकर--
उफ! सलोनी! अपने बाणों से उनको घायल करते जीवों को बींध डालो।
ऐसा होना मुमकिन नहीं रूपसी बहन, वे जीव उनके शरीर से चिपटे हुए हैं। मेरे चलाए बाण उनको भी लग सकते हैं...

... हमें उन्हें बचाने का कोई दूसरा साधन खोजना होगा।
दूसरा साधन यह है कि हम किसी तरह इस मोटे सलाखों के पिंजरे को खोलने में सफल हो जायें।

नहीं। मुझे यह भी मुमकिन नहीं लगता, लेकिन फिर भी तुम पिंजरे को खोलने का कोई रास्ता देखो! तब तक मैं कोई अन्य उपाय सोचती हूं!
ठीक है!

दोनों अपने-अपने तरीके से मोकाल को बचाने में जुट गईं-
आहह! क्या ये दोनों मुझे बचा पायेंगी? शायद नहीं... क्योंकि ना रूपसी पिंजरे को खोलने का कोई रास्ता ढूंढ़ सकती है...
...और ना ही सलोनी मुझे बचाने का अन्य कोई उपाय सोच सकती है।
??
...किन्तु सलोनी ने तो अपने धनुष पर बाण चढ़ाकर उसे मोकाल की तरफ तान दिया था-
हे देवता! सहायता करना मेरी, अगर मेरे कारण उन्हें जरा भी खरोंच आई तो मैं अपने आपको समाप्त कर लूंगी।
सलोनी ने अपने कांपते हाथों को स्थिर किया...
...और छोड़ दिया बाण...
...जो सनसनाता हुआ ठीक अपने निशाने पर जा लगा-
??
खच्च

फिर तो सलोनी एक के बाद एक कई तीर छोड़ती चली गई...

...जिनके निशाने अद्‌भुत और अचूक थे–

आश्चर्य के समुद्र में डुबकियां लगाता मोकाल अभी कुछ और समझ पाता उससे पहले ही–

एक झटके से मुंह में ठुंसी गेंद उसके मुंह से बाहर थी–

अब आप अपने महागुरु का नाम बोल कर महाबली बन जाएं!

ओह!

सलोनी के आवाज पर मानो सोते से जागा मोकाल–

दूसरे ही क्षण–

भोऽऽकाऽऽल

अब महाबली मोकाल के आगे उन बंधनों की क्या बिसात थी!

... और भोकाल की तलवार में बसी ज्वालाशक्ति के आगे पिंजरे के सलाखों की क्या बिसात थी-

...तब भोकाल के क्रोध का कहर टूटा हिंसक जीवों पर-

जल्द ही-

बहुत-बहुत धन्यवाद सलोनी! अगर तुम अपनी अद्भुत सूझबूझ और अनोखी कला का कौशल नहीं दिखाती तो आज मृत्यु ने मुझे निश्चित ही अपना ग्रास बना लिया होता।

धन्यवाद देकर मुझे पाप का भागीदार मत बनाइये स्वामी! अपने पति के प्राणों की रक्षा करना हर नारी का धर्म है।

चलो प्रिय! अब हम तुरन्त ही यहां से निकल चलें।

हां, यहां से मैं चलूंगा जरूर, लेकिन अकेला नहीं। तूरीन और अपने साथियों को साथ लेकर...

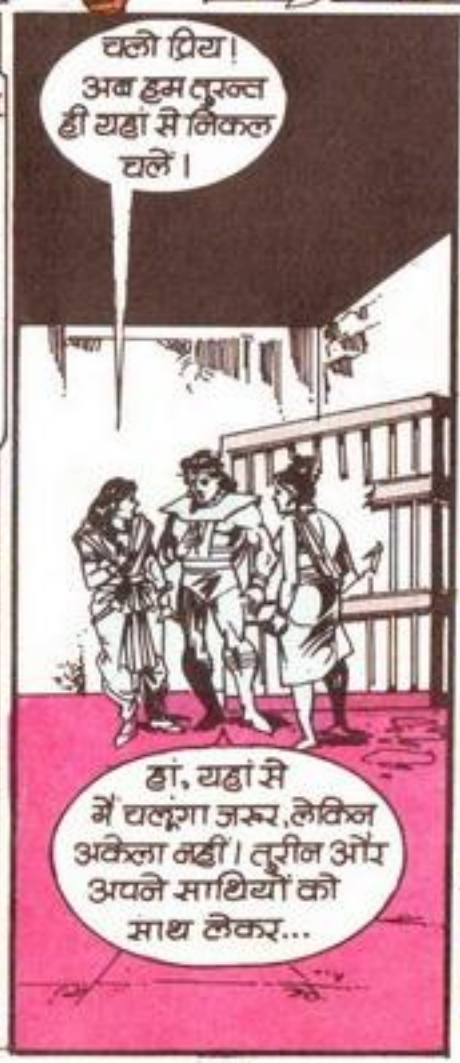

... जो निश्चित ही किसी बड़े संकट में फंसे होंगे-

अब हमसे हमारी मृत्यु मात्र एक क्षण की दूरी पर है।
और उसी एक क्षण को कभी नहीं आने देगा. भोकाल...

धड़ाक
भोकाल!

बंधनमुक्त होते ही सभी भोकाल से लिपट गये-
ओह! भोकाल! हम तो यह आस छोड़ चुके थे कि अब हम दुबारा मिल पायेंगे।
हमारे भाग्य में अभी जुदा होना नहीं लिखा था मित्रो...

...लेकिन राजा विवेकमोहन ने मृत्यु देकर हमें जुदा करने का प्रयत्न किया है मैं उसे जीवित नहीं छोड़ूंगा।
उसके पाप का घड़ा अब भर गया है, आओ उसे उसकी दुष्टता का दण्ड देने चलें।

तभी-
कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है भोकाल, मैं यहीं आ गया हूं।
विवेक मोहन को अपने सामने खड़ा देखकर...

...सभी क्रोध से गरज उठे---

तूने धोखे से हमें मारना चाहा, अब तू बचेगा नहीं दुष्ट।

अपने दंताक से सैकड़ों टुकड़ों में चीर डालूंगा मैं तेरे पापी शरीर को।

ठहरो साथियो!

यह मेरा शिकार है इसलिए इसे दण्ड मैं ही दूंगा। परिणाम चाहे जो भी हो कोई आगे नहीं बढ़ेगा।

अपने साथियों को रोककर...

...भोकाल विवेक मोहन के सामने जा खड़ा हुआ-

मुझे इस बात का अफ़सोस होगा भोकाल कि मेरे हाथों तू सबसे पहले मरेगा। जबकि मैं तुझे सबके बाद तड़पा-तड़पाकर मारना चाहता था।

कौन किसके हाथ से मरेगा, ये तो समय बताएगा दुष्ट!

कहते हुए...

...भोकाल ने तलवार घूमा दी-

लेकिन विवेक मोहन ने न सिर्फ स्वयं को बचाया...

...बल्कि-

अब मेरी बारी है भोकाल! और मुझे विश्वास है कि तू मेरे वार से बच नहीं सकता।

तेरा सामना आज सिर्फ भोकाल से नहीं, उसके आक्रोश से भी है विवेक मोहन! इसलिए ना तू बच पायेगा...

...और ना तेरी यह तलवार!
ओह!
टनाक

अब-
तेरा अंत समय आ गया दुष्ट विवेक मोहन! अपने इष्ट देवों को याद कर ले।

भुलावे में है भोकाल! तू मेरा क्रुद्ध नहीं...

...बिगाड़ सकता!
अंय महागुरु भोकाल की तलवार के वार को ना सिर्फ उसने अपने हाथ पर रोक लिया बल्कि उसे मेरे हाथ से छीन भी लिया।

...वहीं तूरीन-

वह शैतान भोकाल को मार देगा। मैं उसे बचाती हूं।

नहीं तूरीन! भोकाल ने कहा था परिणाम चाहे जो भी हो, हममें से कोई बीच में नहीं पड़ेगा।

ल... लेकिन अब तो भोकाल की जान पर बनी है। उसकी नाक से खून बह रहा है।... आंखें उबल पड़ने पर उतारू हैं। वह मर जायेगा अतीक!

नहीं उसे कुछ नहीं होगा। मुझे विश्वास है इस सबके बाद भी भोकाल जीतेगा हां... भोकाल जरूर जीतेगा।

अतिक्रूर के उन शब्दों ने मानो भोकाल के शरीर में नया जोश भर दिया था-

मुझे अपने साथियों के विश्वास को नहीं मरने देना। मुझे इस कुबड़ा शैतान से जीतना ही होगा।

बड़ी ही मुश्किल से भोकाल अपने पैरों को हिलाकर पीछे ले जाने में सफल हुआ।

और फिर-

भड़ाक

कुबड़ा शैतान के पेट में पड़ी भोकाल की उस ठोकर में भोकाल के शरीर की सारी शक्ति भरी हुई थी-

परिणाम-

लड़खड़ाकर कुबड़ा शैतान ने भोकाल को छोड़ दिया।

आहsssss

अगले ही क्षण कुबड़ा शैतान सम्भलकर भयंकर रूप से भोकाल की तरफ बढ़ा--

कुबड़ा शैतान से तू बच नहीं सकेगा भोकाल !

--उधर कुबड़ा शैतान ने आगे कदम बढ़ाये...

इधर विद्युत की सी फुर्ती से लपककर भोकाल ने अपनी तलवार उठा ली-

दूसरे ही क्षण--

खच्चाक

पीठ से उभरी भुजाओं के कटने के साथ ही कुबड़ा शैतान की चीख से वातावरण गूंज उठा-

भोकाल ने वार करने का वह दूसरा अवसर भी न गंवाया--

लेकिन इस वार के साथ ही भोकाल आश्चर्यचकित रह गया-

क्योंकि--

ओह ! नहीं। कुबड़ा शैतान तो अदृश्य हो गया।

देखा तुरीन ! मैं ना कहता था कि मेरा मित्र जीतेगा, जरूर जीतेगा !

फिर अपने सांसों की संगत करते हुए भोकाल को सभी ने घेर लिया-

समाप्त